(लोक जागरण एंव तुलसी शोध संस्थान नगर निगम इलाहाबाद द्वारा दिनांक 9th August, 2012 को आयोजित वार्षिक तुलसी जयंती समारोह पर मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति पंकज मित्थल का उदबोधन)

नमस्कार

''बन्दौं तुलसी दास पद रामचरित सर कीन्ह''

इस पावन प्रयाग नगरी की नव निर्वाचित महापौर महोदया,
पूज्य स्वामी जी महाराज, सच्चा आश्रम, परम आदरणीय न्यायमूर्ति पलोक
बसु जी, प्रो0 राम सकल पाण्डे जी, डा0 जमीर हसन जी, लोक जागरण एवं
तुलसी शोध संस्थान नगर निगम, इलाहाबाद के पदाधिकारीगण,
उपस्थित देवियों एवं सज्जनों

सम्पूर्ण गुणों से सम्पन्न, धर्म के मूरतरूप, भारतीय आस्था के प्रतीक व भारतीय संस्कृति के आदर्श मर्यादा पुरषोत्तम भगवान **श्री राम** की अमृत कथा के रचयिता सन्त शिरोमणि बाबा तुलसीदास जी किसी से भी तो अपरिचित नहीं। मानवकल्याण का महाकाव्य **राम चरित मानस** उनकी ऐसी विलक्षण रचना है जो **न तो भूतो न भविष्यति** अर्थात जो न पहले कभी लिखी गयी है और न कभी आगे लिखी जाएगी।

बचपन में गोस्वामी जी के जीवन पर आधारित अमृत लाल नागर की कृति **"मानस का हंस"** पढी थी। इस पुस्तक ने मन को लुभाया था और तुलसी के प्रति मुझमें प्रेरणा भी जागृत की थी। फिर भी मैनें तुलसी के विषय में पढने व अधिक जानकारी प्राप्त करने का कोई सार्थक प्रयास नहीं किया।

गोस्वामी तुलसी दास जी या उनके द्वारा रचित रामचरित मानस कभी भी मेरे शोध व अध्ययन का विषय नही रहा न ही मै मानस का नियमित पाठ करने वाला रहा हूँ। अतः उनके बारे में मेरा ज्ञान काफी सीमित है। मै दोनों के बारे में केवल इतना ही जानता हूँ जितना भारत में रहने वाला एक साधारण जन भारतीय परंपरा व संस्कृति से उनके बारे में स्वतः कुछ सीख लेता है। इस दृष्टि से आज के इस समारोह में मेरा तुलसी दास जी के बारे में कुछ भी कहना या टिप्पणी करना सूर्य को दीपक दिखाने भर है। अपने इस सीमित व अल्प जानकारी के आधार पर ही गोस्वामी तुलसीदास के विषय में अपना दृष्टिकोंण रखने का प्रयास करूंगा।

राम चरित मानस से हमें गोस्वामी जी के न केवल धर्मपरायण, रामभक्त व एक श्रेष्ठ साहित्यकार होने का पता चलता है वरन् उनके एक समाज सुधारक, दार्शनिक, चिंतक,

लोकदृष्टक व संस्कृति के उन्नायक का विस्तृत रूप भी देखने को मिलता है।

सर्वविदित है कि श्री हरी अपने सप्तम अवतार से पूर्व किसी कारण विशेष से ही पृथ्वी लोक पर अवतरित हुए और कार्य समाप्त होते ही लोप हो गये। रामअवतार में ही वह प्रथम बार मानव रूप में सृष्टि पर आये और एक मानव रूप में जीवन निर्वाह कर मानवों को मर्यादा में रहकर जीने का संकेत दिया। तुलसी दास जी ने इस संकेत को भली प्रकार समझा और उन्होंने भगवान राम के रूप में एक आदर्श चरित्र समाज के सामने रखा है और प्रयास किया कि हर व्यक्ति उसका अनुकरण कर एक सभ्य समाज की रचना करें। अतः सन्तशिरोमणि बाबा तुलसीदास को मै एक उत्कृष्ट समाजसुधारक के रूप में अधिक देखता हूँ।

कहने को तो रामचरित मानस की रचना उन्होंने स्वांतसुखाय की थी परन्तु वास्तव में हम जानते हैं कि वह स्वांतसुखाय न होकर सर्वजन हिताय है। गोस्वामी जी के समय में देवभाषा संस्कृत ही प्रचलित भाषा थी परन्तु गोस्वामी जी ने उससे हटकर एक सीधी सरल अवधी भाषा में इस ग्रन्थ की रचना की। उद्देश्य केवल इतना था कि गोस्वामी जी चाहते थे कि रामचरित व रामराज्य के गुणों को हर जन मानस के हृदय तक पहुंचा कर उनके अर्न्तमन में मर्यादा पुरषोत्तम का चरित्र व्याप्त किया जा सके। यह उनके एक समाज सुधारक और लोकदृष्टा होने का परिचायक है।

विनयपत्रिका के आरम्भ में बाबा गणपति जी से याचना करते हैं **''बसही राम सीय मानस मोरे''** उनका लक्ष्य सिया वररामचन्द्र को अपने व सभी मानव जन के अंतःकरण में व्याप्त करना था।

गोस्वामी जी एक उत्तम चरित्र के माध्यम से आदर्श समाज व रामराज्य की सरंचना चाहते थे।

"नहिं दरिद्र कोई दुखी न दीना। नहिं कोई अबुध न लच्छन हीना।"

राम चरित मानस ऐसे अनेंको अनेक प्रसंगों से भरी पड़ी है जिससे हमें एक अच्छे समाज की कल्पना देखने को मिलती है। एक छोटा सा उदाहरण राजा दशरथ के चारो पुत्रों के विवाह पश्चात उनकी पुत्रवधुओं का राजमहल में आने का है। राजा दशरथ ने अपनी रानियों से कहते हैंः–

"बधू लरकिनी पर घर आई। राखेहु नयन पलक की नाई।"

अर्थात सभी बहुयें अभी कम उम्र की हैं और नये घर आयी हैं। इनकी उसी प्रकार देखभाल करनी है जैसे पलकें नेत्रों की करती हैं।

गोस्वामी जी ने यथा सम्भव हर प्रकार के रिश्ते को निभाने के लिए कैसा व्यवहार करना चाहिए का भी जगह–जगह उल्लेख किया है और तो और अपने शत्रु से भी कैसा व्यवहार होना चाहिए उसकी ओर भी उन्होंने इंगित किया है।

शत्रु के लिए भी वह आदर्श भाव रखते हैं। शत्रु से कैसे व्यवहार हो उसका वर्णन उन्होंने अंगद को दूत के रूप में रावण के पास भेजे जाने के समय कुछ इस प्रकार किया हैः–

"काजु हमार तासु हित हो। रिपु सन करेहु बतकही सो।"

अर्थात रावण से इस प्रकार बात करना कि हमारा कार्य तो सिद्ध हो ही पर उसका भी हित हो।

बालकांड के मंगलाचरण में सर्वप्रथम गोस्वामी जी ने देवी सरस्वती व गणपति जी की वन्दना की है। **''वन्दे वाणी विनायको।''** उनका वाणी और विनायक को नमन करने का अभिप्राय केवल इतना मात्र है कि जीवन में जैसे वाणी आवश्यक है उसी प्रकार विनय और विवेक भी महत्वपूर्ण हैं अतः वाणी का प्रयोग विनम्रता व विवेकता से होना चाहिए यह भी उनका समाज के प्रति चिन्तन दर्शाता है।

समाज के हर व्यक्ति के चरित्र निर्माण और उनका चरित्र मर्यादा पुरषोत्तम भगवान श्री राम का अनुकरणीय हो ऐसा ही उनका मत रहा होगा। गांधी जी भी कहा करते थे कि आज की शिक्षा प्रणाली से बेहतर पुरानी शिक्षा पद्धति थी जिसमें मूल्यों पर आधारित शिक्षा के द्वारा व्यक्ति का निर्माण किया जाता था। कहने का तात्पर्य मात्र इतना ही है कि आज देश के उत्थान का एक सीधा सरल उपाय चरित्र–निर्माण, नगर–निर्माण, समाज–निर्माण व फिर राष्ट्र–निर्माण ही है।

गोस्वामी जी का कोई भी ग्रन्थ किसी भी काल में अप्रासंगिक नहीं होगा और हमें उनसे हमेशा मर्यादा और मूल्यों पर आधारित जीवन जीने की कला सीखने की प्रेरणा मिलती रहेगी।

मैं लोक जागरण एंव तुलसी शोध संस्थान नगर निगम इलाहाबाद का हृदय से

आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे इस कार्यक्रम से जोड़ व तुलसी के प्रति मेरे मन में फिर से नयी चेतना जागृत की है। मैं संस्था के विकास की कामना करता हूँ और उसमें अपने यथा योग्य सहयोग का आश्वासन देता हूँ।

जय भारती